गुरु गोरखनाथ जी

राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

भाषा हमारी पहचान है, साहित्य हमारी संवेदना, ज्ञान हमारी शक्ति और सृजन हमारा भविष्य।

राजपाल

सत्र : 2025-26

अगस्त, 2026

हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 02, अंक 20, अगस्त 2026
भाद्रपद और सावन| विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
राकेश बिडाणियाँ,
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

नरेश सिंह,
विनय कुमार ,
कोमल, मनीषा

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

उदयभानु हंस
फ़िल्म समीक्षा
विविध

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
विलोम शब्द
प्रशासनिक शब्दावली
पुस्तक समीक्षा

हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के लिए भी उपयोगी

संदेश

प्रिय विद्यार्थियों, अगस्त का महीना भारतीय इतिहास और राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह माह हमें स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष, त्याग और बलिदान की गौरवपूर्ण परंपरा का स्मरण कराता है। स्वतंत्रता केवल राजनीतिक बंधनों से मुक्ति नहीं, बल्कि विचारों, अभिव्यक्ति और सृजन की स्वतंत्रता का भी नाम है। हिंदी भाषा और साहित्य ने भारतीय स्वतंत्रता चेतना को जागृत करने तथा समाज में राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी विभाग की यह विभागीय पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मकता, चिंतनशीलता और साहित्यिक प्रतिभा का सुंदर प्रतिबिंब है। कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, शोधपरक आलेख और अन्य रचनात्मक विधाओं के माध्यम से विद्यार्थी अपने अनुभवों और विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। ऐसी पत्रिकाएँ विद्यार्थियों को केवल लेखन का मंच ही प्रदान नहीं करतीं, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, तार्किक दृष्टि, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास भी करती हैं। आज का युग तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युग है। ऐसे समय में हिंदी भाषा और साहित्य के सामने नई संभावनाओं के साथ नई चुनौतियाँ भी उपस्थित हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीकी प्रगति को अपनाते हुए हिंदी की वैज्ञानिकता, समृद्धि और व्यापकता को नए माध्यमों तक पहुँचाएँ। हमारा युवा वर्ग हिंदी को केवल अध्ययन का विषय न मानकर ज्ञान, रोजगार, संचार, तकनीक और सृजन की सशक्त भाषा के रूप में स्वीकार करे। मुझे प्रसन्नता है कि हिंदी विभाग विद्यार्थियों को साहित्यिक एवं अकादमिक गतिविधियों से जोड़ते हुए उनकी प्रतिभा को निरंतर प्रोत्साहित कर रहा है। विभागीय पत्रिका इसी जीवंत शैक्षणिक वातावरण की परिचायक है। मैं पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी प्राध्यापकों, संपादक मंडल तथा विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों में साहित्य के प्रति अनुराग, भाषा के प्रति सम्मान और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को और अधिक सुदृढ़ करेगी।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ।

प्राचार्य
प्रो. अंजू चौधरी

संपादकीय

स्वाधीनता की चेतना और सृजन की उड़ान

अगस्त भारतीय चेतना का वह महीना है, जिसमें स्वाधीनता का स्वप्न, संघर्ष का इतिहास, बलिदान की गाथा और राष्ट्र-निर्माण का संकल्प एक साथ दिखाई देते हैं। यह महीना हमें उन असंख्य ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और संघर्ष का स्मरण कराता है, जिन्होंने अपने वर्तमान का बलिदान देकर देश के भविष्य को स्वतंत्र बनाया। स्वतंत्रता दिवस केवल उत्सव का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन और अपने राष्ट्रीय दायित्वों के प्रति संकल्प लेने का पर्व भी है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी भाषा और साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। साहित्यकारों ने अपनी लेखनी को जनजागरण और राष्ट्रचेतना का माध्यम बनाया। कविता, कहानी, नाटक, पत्रकारिता और गीतों के माध्यम से स्वतंत्रता की भावना जन-जन तक पहुँची। हिंदी ने विभिन्न भाषायी और सांस्कृतिक समुदायों के बीच संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया। इसलिए हिंदी केवल संप्रेषण की भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक स्मृति, संवेदना और राष्ट्रीय अस्मिता की भाषा भी है। हिंदी विभाग की यह विभागीय पत्रिका इसी समृद्ध परंपरा की रचनात्मक कड़ी है। किसी भी शैक्षणिक संस्था की पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन नहीं होती, बल्कि वह संस्था के बौद्धिक परिवेश, रचनात्मक ऊर्जा और विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता का दस्तावेज होती है। विद्यार्थियों की कविताएँ उनके संवेदनशील मन को अभिव्यक्ति देती हैं, कहानियाँ जीवन के विविध अनुभवों को स्वर देती हैं और आलेख उनके चिंतन एवं अध्ययनशीलता का परिचय कराते हैं। आज का समय तकनीकी परिवर्तन का समय है। इंटरनेट, डिजिटल माध्यम और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने ज्ञान तथा संचार की दुनिया को व्यापक रूप से बदल दिया है। हिंदी के सामने जहाँ नई चुनौतियाँ हैं, वहीं असीम संभावनाएँ भी हैं। आवश्यकता है कि हिंदी को केवल साहित्य और भावाभिव्यक्ति की भाषा न मानकर ज्ञान-विज्ञान, तकनीक, अनुसंधान, रोजगार, पत्रकारिता और नवाचार की सशक्त भाषा बनाया जाए। युवा पीढ़ी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। साहित्य हमें केवल सुंदर शब्दों का संसार नहीं देता, बल्कि मनुष्य और समाज को समझने की दृष्टि प्रदान करता है। वह हमें संवेदनशील बनाता है, प्रश्न करना सिखाता है और सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराता है। इसलिए विद्यार्थियों का साहित्यिक सृजन उनके व्यक्तित्व-विकास का भी महत्त्वपूर्ण माध्यम है। यह विभागीय पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच देने और उनकी रचनात्मकता को दिशा प्रदान करने का विनम्र प्रयास है। हमें विश्वास है कि इसमें प्रकाशित रचनाएँ पाठकों को विचार, संवेदना और सृजन के नए आयामों से परिचित कराएँगी। आइए, अगस्त के इस पावन अवसर पर हम स्वतंत्रता की विरासत को अपने विचार और कर्म में उतारने का संकल्प लें। हिंदी के प्रति सम्मान, साहित्य के प्रति अनुराग और ज्ञान के प्रति जिज्ञासा को अपनी जीवन-यात्रा का आधार बनाएँ।

भाषा हमारी पहचान है, साहित्य हमारी संवेदना, ज्ञान हमारी शक्ति और सृजन हमारा भविष्य।
इन्हीं शुभकामनाओं के साथ यह अंक सुधी पाठकों और विद्यार्थियों को समर्पित है।

संपादक

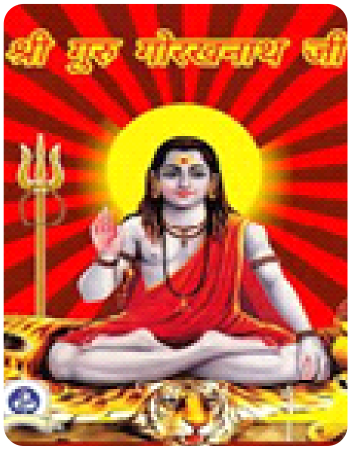

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

५-२३.२ सन्त नामदेव ने २२६ हिन्दी पदों, १३ हिन्दी साखियों, तथा २१०७ मराठी अभंगों की रचना की है। इन का समस्त साहित्य मुक्तक रचनाओं के रूप में उपलब्ध है। इनकी रचनाओं में ईश्वर की सर्वव्यापकता, नामजाप की साधना, गुरू और संत महिमा, हठयोग पद्धति, वाह्याडम्बर निषेध आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है। इन की रचनाओं में नाथ सम्प्रदाय के योगियों का स्वर होने के कारण इन्हें गोरखनाथ का सच्चे अर्थों में उत्तराधिकारी माना गया है।" वाह्याचार का निषेध करते हुए नामदेव का कथन है :

'पाहन आगे देब कटीला, वाको प्राणं नहीं वाकी पूजा रचीली ।
निरजीव आग सरजीव मारै, देषत जनम आपनो हारै । आंगणि देव पिछी कडि पूजा,
पाहन पूजि भए नर दूजा।***

तथा गुरू कृपा के विषय में इनका कथन है :-
गुरू को सबद बैकुण्ठ निसरानी, हृदे प्राग प्रेम रस बानी । गुरू के मेहेर से नामा भए साधु ।।

हठयोग साधना का वर्णन करते हुए नामदेव भी गोरक्षनाथ के शब्दों में ही कहते हैं:--
गगन मंडल में रहनि हमारी, इडा पिंगला सुषमनि नारी, चन्द सूर दोऊ समिकरि रापु, पुनरपि जनमि न भाऊँगा । पवनां मंझि रहाऊँगा ।। ब्रह्म ज्योति मिलि जाऊँगा ।

इन्होंने सहज समाधि का वर्णन किया है तथा उलटबाँसी कथन पद्धति को भी प्रपनाया है।

५-२३.३ गोंदा नामदेव के चार पुत्रों में तृतीय पुत्र थे। इनके द्वारा लिखित १६ मराठी अभंग तथा ५५ हिन्दी छंद मिलते हैं, जिनमें इन्होंने 'नाथपंथीय' श्रेष्ठ कवि नामदेव की जीवन लीला का वर्णन किया है।
५-२३.४ देवनाथ का जन्म भ्रमरावती जिले के सुरजी अंजनगाँव नामक स्थान पर सन् १७५४ ई० में हुआ था। इनके रचित १०८ हिन्दी पद उपलब्ध हैं, जिनमें योगसाधना की रहस्यात्मक अभिव्यक्ति के लिए अनेक गूढ़, दुल्ह और जटिल शब्दावली का प्रयोग मिलता है:-
माया खेल झूठ पसरा मूगजल साच दिखावे ।
भूला नर जो इस जल म्याने फिर-फिर गोता खावे ।।
पलट कमलयो उलट भले, जब निकट घोटमन पलट रह्यो ।

न द, अयन रूप निजनयन प्रगट लखाट भयो उजियाला ।
५-२३.५ शिव दीन केसरी ज्ञाननाथ की परम्परा के नाथ कवि हैं। इनका जन्म सन् १६६८ ई० में हुआ था। इनका मठ गोदावरी के किनारे पैठण में है। इनकी प्रमुख रचनाएँ विवेक दर्पण तथा ज्ञानकैवल्य हैं, जिनमें ज्ञानमार्ग और भक्ति मार्ग का समन्वय प्रस्तुत किया गया है। इनकी हिन्दी रचनाओं में भी यही स्वर प्रमुख है :-

उस पर वारी जाऊ रे। उनके पाय लागू रे ।। नव दरवाजे दसवी खिरकी, ऊपर है येक फिरकी । बिरला सोधो कोइ एक जाने, लेकर मन की गिरकी ।।

५-२३.६ गुडाकेशव सत्रहवीं शताब्दी के प्रमुख नाथ कवि कहे जाते हैं । इनका निवास-स्थान यवतमाल जिला के ग्राम विठ्ठल में माना जाता है। इनकी रचनाओं से इनका नाथ सम्प्रदाय में दीक्षित होना सिद्ध होता है :ं

हम तो दास गुरू के नाथ उपासी त्रिजग को आदिनाथ सो साँई हर घट हिरदे बिलासी

इनकी रचनाओं में परमात्मा से विरह के गीत, आरतियाँ, पिण्ड में ब्रह्माण्ड, ब्रह्म की सर्वव्यापकता, गुरू महिमा, क्षणभंगुरता, वाह्याचार का निषेध आदि विषयों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इनके हिन्दी पदों पर नाथसम्प्रदाय का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है :-
गगन मंडल मो सेज सम्हारो । गुंडा केशो आव्वल मुद्रा ।।"

आदि

५-२३.७ एकनाथ महाराष्ट्र के नाथ, वारकरी, दत्त, गाणपत्य और सूफी सम्प्रदाय की गुरू-शिष्य परम्परा में सम्मिलित रूप से मिलते हैं। इनका जन्म सन् १५३३ ई० में तथा मृत्यु सन् १५६६ ई० में हुई थी। इनकी रचनाओं में साठ हजार ओवियाँ तथा चार हजार अभंग उपलब्ध हैं। इनके हिन्दी में रचित १८८ पद उपलब्ध हैं जिनमें गुरू-भक्ति, निर्गुण-निराकार ब्रह्म में विश्वास, योगाचरण, बाह्याचार का खंडन किया गया है, यथा-

नाम बेचकर दाम लेते, उसकी करनी हराम है।
फकीर होकर फिकीर करता, उसका मु काला है ।
नाथपंथ की मुद्रा डाली, जग में सिगी बजावत है ।।

गुरु गोरखनाथ के पद

कैसे बोलौं पंडिता, देव कौनैं ठांईं, निज तत निहारतां अम्हें तुम्हें नाहीं ॥ टेक ॥ पखांणची देवली पखाण चां देव। पखांण पूजिला कैसें फटीला सनेह ॥ सरजीव तोड़िया निरजीवी पूजिला। पापचीं करणीं कैसें दूतर तिरोला ॥ तीरथि तीरथि सनानं करीला । बाहर धोये कैसें भीतरि भेदिला ॥आदिनाथ नाती मछिंद्रनाथ पूता । निज तत निहारं गोरख अवधूता ॥

हे पंडित ! कैसे बताऊँ, देवता किस स्थान पर है ? जब आत्मतत्त्व जान लें तो हम, तुम का भेद नहीं रहता। मन्दिर पाषाण से बना है और देव भी पाषाण/पत्थर का है। पत्थर को पूजने से स्नेह भाव कैसे निकलेगा ? तुम सजीव फूल तोड़ते हो और उनसे निर्जीव पत्थर की पूजा करते हो, इस पाप कर्म से दुस्तर (दूतर) सागर कैसे तर पाओगे ? तुम अनेक तीर्थों पर स्नान करते हो। शरीर को बाहर से धोने मात्र से मन को कैसे भेद पाओगे ? आदिनाथ का पौत्र, मछन्दर नाथ का पुत्र गोरख - कहता है- हे अवधू ! आत्म स्वरूप को पहचानो ।
इस पद में गोरख मूर्ति पूजा और तीर्थ स्थान को आत्मज्ञान में सहायक नहीं मानते। उनकी दृष्टि में ये अन्धविश्वास ही हैं।

उदयभानु हंस के साहित्य में विस्थापन और विभाजन की वेदना

उदयभानु हंस के साहित्य में विभाजन विभीषिका का योगदान

भारतीय स्वतंत्रता के साथ ही वर्ष 1947 में हुए देश-विभाजन ने करोड़ों लोगों के जीवन को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। यह केवल राजनीतिक घटना नहीं थी, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक संरचना को झकझोर देने वाली त्रासदी थी। हिंदी साहित्य में अनेक रचनाकारों ने विभाजन की पीड़ा को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया, जिनमें हरियाणा के प्रख्यात साहित्यकार उदयभानु हंस का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उदयभानु हंस का साहित्य मानवीय मूल्यों, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक चेतना और करुणा का सशक्त दस्तावेज़ है। उनके साहित्य में विभाजन विभीषिका की स्मृतियाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती हैं।

उदयभानु हंस का जन्म अविभाजित भारत के पंजाब प्रांत में हुआ था। विभाजन के समय उन्हें भी लाखों लोगों की भाँति विस्थापन, असुरक्षा और मानसिक आघात का अनुभव करना पड़ा। इस व्यक्तिगत अनुभव ने उनकी संवेदना को और अधिक गहरा बनाया। विभाजन की त्रासदी ने उनके मन में मानवता, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता के प्रति विशेष आग्रह उत्पन्न किया। यही कारण है कि उनके साहित्य में जाति, धर्म, संप्रदाय और क्षेत्रीय संकीर्णताओं के स्थान पर मानवतावादी दृष्टि प्रमुख रूप में दिखाई देती है।

उदयभानु हंस की कविताओं में राष्ट्रप्रेम और अखंड भारत की भावना बार-बार व्यक्त हुई है। वे मानते थे कि भारत की शक्ति उसकी विविधता में निहित है। विभाजन ने जिस प्रकार सामाजिक सौहार्द को नष्ट किया, उससे वे अत्यंत व्यथित थे। इसलिए उनकी रचनाओं में प्रेम, भाईचारा और मानवीय एकता का संदेश मिलता है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से यह स्थापित करने का प्रयास किया कि धर्म और संस्कृति का वास्तविक उद्देश्य मनुष्यों को जोड़ना है, न कि उन्हें अलग करना।

विभाजन विभीषिका ने उदयभानु हंस के साहित्य में करुणा और मानवीय संवेदना के स्वर को और अधिक प्रखर बनाया। उनकी रचनाओं में पीड़ित, शोषित और विस्थापित जन-जीवन के प्रति सहानुभूति दिखाई देती है। विभाजन के दौरान लाखों लोगों ने अपना घर, परिवार और पहचान खो दी थी। इस पीड़ा को हंस ने मानवीय दृष्टि से समझा और अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया। उनकी कविताओं में जीवन के संघर्षों के बीच आशा और विश्वास का स्वर भी मिलता है, जो विभाजन जैसी त्रासदी के बाद समाज को पुनर्निर्माण की प्रेरणा देता है।

उदयभानु हंस की साहित्यिक दृष्टि केवल अतीत की पीड़ा तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने भविष्य के लिए एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। वे राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समन्वय और भारतीय जीवन-मूल्यों के समर्थक थे। विभाजन के अनुभव ने उनके भीतर यह विश्वास दृढ़ किया कि भारत की अखंडता और सामाजिक सौहार्द ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है। इसलिए उनकी रचनाओं में देशभक्ति, सांस्कृतिक चेतना और मानवता का समन्वय दिखाई देता है।

हरियाणा की सांस्कृतिक परंपराओं और लोकजीवन के प्रति उदयभानु हंस की गहरी आस्था भी विभाजन के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। विभाजन के कारण अनेक लोग अपनी मूल भूमि से विस्थापित होकर नए क्षेत्रों में आकर बसे। इस परिस्थिति में सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और नई सामाजिक परिस्थितियों में समरसता स्थापित करने का कार्य साहित्य ने किया। उदयभानु हंस ने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति की उदारता और समन्वयकारी स्वरूप को प्रस्तुत किया, जो विभाजन की विभीषिका के विरुद्ध एक मानवीय प्रतिरोध के रूप में देखा जा सकता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उदयभानु हंस के साहित्य में विभाजन विभीषिका का प्रभाव अत्यंत गहरा और व्यापक है। विभाजन की पीड़ा ने उनके साहित्य को मानवीय संवेदनाओं, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक समन्वय से समृद्ध किया। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानवता, प्रेम, भाईचारे और राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया। इस दृष्टि से उदयभानु हंस का साहित्य केवल विभाजन की स्मृति नहीं, बल्कि उससे उत्पन्न मानवीय मूल्यों का सशक्त दस्तावेज़ भी है।

ENGISH PHRASES WORDS

1. **Take it easy** - Take it easy and enjoy your weekend.
2. **Just kidding** - Don't get angry, I'm just kidding.
3. **Sounds great** - Your idea sounds great.
4. **I'm ready -** I'm ready for the challenge.
5. **That's awesome!** - That's awesome! You did really well.
6. **Why not? -** Let's try something new. Why not?
7. **I don't mind -** I don't mind waiting for you.
8. **Be right back -** I'll be right back.
9. **Good luck! -** Good luck with your exam!
10. **Have fun! -** Have fun at the party!
11. **Forget it -** Forget it. It's not important.
12. **Come what may -** I'll keep trying, come what may.
13. **Trust me -** Trust me, everything will be fine.
14. **Go ahead -** Go ahead, you can start now.
15. **Not yet -** I'm not ready yet.
16. **Absolutely! -** Absolutely! I agree with you.
17. **My bad -** My bad, I made a mistake.
18. **Same here -** I'm tired. Same here.
19. **Lucky you! -** You got a holiday tomorrow? Lucky you!
20. **Fingers crossed! -** Fingers crossed for your exam!

फ़िल्म समीक्षा : मारे गए गुलफाम

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी '**मारे गए गुलफाम**' पर आधारित फिल्म '**तीसरी कसम**' : एक आलोचनात्मक समीक्षा

सारांश

फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी कथा-साहित्य के ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने भारतीय ग्रामीण जीवन, लोकसंस्कृति और आंचलिक चेतना को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया। उनकी प्रसिद्ध कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित फिल्म 'तीसरी कसम' (1966) भारतीय सिनेमा में साहित्यिक कृतियों के सफल रूपांतरण का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस फिल्म में प्रेम, मानवीय संवेदना, लोकजीवन, सामाजिक विडंबना तथा नैतिक मूल्यों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण हुआ है। प्रस्तुत शोध-आलेख में फिल्म की कथावस्तु, पात्र-योजना, आंचलिकता, संगीत, प्रतीकात्मकता तथा साहित्य और सिनेमा के अंतर्संबंधों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है।
मुख्य शब्द : फणीश्वरनाथ रेणु, मारे गए गुलफाम, तीसरी कसम, आंचलिकता, लोकसंस्कृति, साहित्य और सिनेमा।

भूमिका

भारतीय साहित्य और सिनेमा का संबंध अत्यंत घनिष्ठ रहा है। अनेक उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों पर सफल फिल्में बनी हैं, किंतु कुछ ही फिल्में ऐसी हैं जो मूल रचना की आत्मा को सुरक्षित रख पाती हैं। तीसरी कसम ऐसी ही कालजयी फिल्म है। प्रसिद्ध गीतकार शैलेन्द्र द्वारा निर्मित तथा बासु भट्टाचार्य द्वारा निर्देशित इस फिल्म की कहानी और संवाद स्वयं फणीश्वरनाथ रेणु ने लिखे थे। परिणामस्वरूप फिल्म में रेणु की आंचलिक दृष्टि, ग्रामीण संवेदना और लोकजीवन की सहजता पूर्णतः सुरक्षित रहती है।

कहानी और फिल्म का कथानक

फिल्म का कथानक बैलगाड़ीवान हीरामन और नौटंकी कलाकार हीराबाई के बीच विकसित होने वाले निष्कलुष और आत्मीय संबंध पर आधारित है। हीरामन एक सीधा-सादा, ईमानदार और संवेदनशील ग्रामीण युवक है। जीवन के अनुभवों से उसने तीन कसमें खाई हैं। तीसरी कसम तब जन्म लेती है जब वह हीराबाई को मेले तक पहुँचाता है और उसके प्रति सम्मान एवं प्रेम का भाव विकसित हो जाता है। दूसरी ओर हीराबाई बाहरी चकाचौंध के बीच जीने वाली, किंतु भीतर से अकेली और संवेदनशील स्त्री है। दोनों के बीच का संबंध सामाजिक सीमाओं और वर्गीय भेदभाव के कारण पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता।
आंचलिकता का प्रभाव

रेणु की रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता उनकी आंचलिकता है। तीसरी कसम में बिहार के ग्रामीण जीवन, मेलों, नौटंकी, बैलगाड़ी, लोकभाषा, लोकगीत और ग्रामीण संस्कृति का अत्यंत सजीव चित्रण मिलता है। फिल्म किसी कृत्रिम ग्रामीण परिवेश का निर्माण नहीं करती, बल्कि वास्तविक लोकजीवन को पर्दे पर उतारती है। यही कारण है कि दर्शक स्वयं उस वातावरण का हिस्सा महसूस करता है।

चरित्र-चित्रण

हीरामन भारतीय ग्रामीण संस्कृति का आदर्श प्रतिनिधि है। वह सरल, निष्कपट, श्रमशील और नैतिक मूल्यों का पालन करने वाला व्यक्ति है। उसके भीतर स्त्री के प्रति सम्मान और पवित्र प्रेम का भाव है।

हीराबाई आधुनिक जीवन की विडंबनाओं का प्रतीक है। मंच पर प्रशंसा पाने वाली यह कलाकार निजी जीवन में अकेलेपन, उपेक्षा और सामाजिक पूर्वाग्रहों की शिकार है। वह हीरामन की सरलता से प्रभावित होती है, किंतु परिस्थितियाँ उसे उससे दूर कर देती हैं।

राज कपूर और वहीदा रहमान ने इन दोनों पात्रों को इतना जीवंत बनाया है कि वे आज भी भारतीय सिनेमा के सर्वश्रेष्ठ चरित्रों में गिने जाते हैं।

सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदना

फिल्म केवल प्रेमकथा नहीं है, बल्कि समाज में व्याप्त वर्गभेद, स्त्री की सामाजिक स्थिति, नैतिक मूल्यों और लोकजीवन की गरिमा का भी चित्रण करती है। हीरामन का प्रेम स्वार्थरहित और निष्काम है, जबकि समाज हीराबाई को केवल मनोरंजन की वस्तु मानता है। फिल्म इस सामाजिक दृष्टिकोण पर गंभीर प्रश्न उठाती है।

संगीत और लोकजीवन

तीसरी कसम का संगीत भारतीय लोकधुनों और ग्रामीण संस्कृति का अद्भुत उदाहरण है। शंकर-जयकिशन के संगीत तथा शैलेन्द्र के गीत फिल्म की आत्मा बन जाते हैं। “सजनवा बैरी हो गए हमार”, “चलत मुसाफिर मोह लियो रे”, “दुनिया बनाने वाले” और “पान खाए सैंया हमार” जैसे गीत केवल मनोरंजन नहीं करते, बल्कि पात्रों की भावनाओं को गहराई प्रदान करते हैं।

प्रतीकात्मकता

फिल्म का शीर्षक “तीसरी कसम” अपने आप में प्रतीकात्मक है। यह केवल हीरामन की व्यक्तिगत प्रतिज्ञा नहीं, बल्कि टूटे हुए विश्वास, अधूरे प्रेम और सामाजिक यथार्थ का प्रतीक है। हीरामन की अंतिम कसम दर्शाती है कि जीवन के कुछ अनुभव मनुष्य के व्यक्तित्व को स्थायी रूप से बदल देते हैं।

उपसंहार

तीसरी कसम भारतीय सिनेमा की कालजयी कृति है। यह प्रेम, करुणा, लोकजीवन और मानवीय गरिमा की ऐसी कथा है जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने निर्माण काल में थी। फणीश्वरनाथ रेणु की ‘मारे गए गुलफाम’ का यह फिल्मी रूपांतरण साहित्य और सिनेमा के आदर्श समन्वय का श्रेष्ठ उदाहरण है। यह फिल्म सिद्ध करती है कि उत्कृष्ट साहित्य समय और माध्यम की सीमाओं से परे जाकर भी अपनी संवेदना और प्रभाव को बनाए रखता है।

संदर्भ

1. ठुमरी।
2. फणीश्वरनाथ रेणु। मारे गए गुलफाम।
3. तीसरी कसम।
4. बच्चन सिंह। हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास। वाणी प्रकाशन।
5. नामवर सिंह। कहानी : नई कहानी। राजकमल प्रकाशन।
6. रामविलास शर्मा। भारतीय साहित्य और संस्कृति। राजकमल प्रकाशन।
7. हिंदी सिनेमा और साहित्य पर विभिन्न आलोचनात्मक लेख एवं शोध-पत्र।

कवि सम्मेलन में राजेश भारती हुए सम्मानित

हिसार में 20वाँ हंस कविता पुरस्कार समारक समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस भव्य एवं गरिमामय आयोजन में साहित्यिक, सांस्कृतिक और हिंदी भाषा के संवर्धन को समर्पित हंस साहित्यिक संस्थान के उपाध्यक्ष पत्र के अनुसार, 'उनके शैक्षणिक, साहित्यिक और शोध योगदान के लिए किया गया।

सभी के कुलपति डॉ. मुकेश पुष्ता के लिए दिया गये तथा वहाँ डॉ. मुकेश कुमार ऋषि वर्मा ने कहा कि यह सम्मान उनके शिक्षा, शोध, हिंदी और भारतीय ज्ञान-परम्परा के संवर्धन के लिए अधिक समर्पण से कार्य करने की प्रेरणा देगा।

डॉ. राजपाल को 'आचार्य' उपाधि व 'सारस्वत सम्मान' मिला

हिसार । ऋषि वैदिक विद्यापीठ, डॉ. मुकेश कुमार ऋषि वर्मा ने कहा कि डॉ. फतेहाबाद-आगरा ने हरियाणा के शिक्षाविद, हिंदी साहित्यकार एवं शोधकर्ता डॉ. राजपाल को शिक्षा, हिंदी भाषा-साहित्य तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा में उत्कृष्ट शैक्षणिक सेवाओं के लिए 'आचार्य' मानद उपाधि और 'सारस्वत सम्मान' प्रदान किया।

विद्यापीठ के उपाधि पत्र के अनुसार, 'उनके शैक्षणिक, साहित्यिक और शोध योगदान के लिए दिया गया। सभी के कुलपति डॉ. मुकेश ऋषि वर्मा ने कहा कि यह सम्मान उनके शिक्षा, शोध, हिंदी और भारतीय ज्ञान-परम्परा के संवर्धन के लिए अधिक समर्पण से कार्य करने की प्रेरणा देगा।

डॉ. राजपाल एवं सुरेश भारती 'नादान' सम्मानित

नभ-छोर न्यूज ⏭ 11 अगस्त

हिसार । राष्ट्रीय साहित्यिक संस्थान की प्रदेश इकाई के तत्वावधान में गॉंव चेहड़ कलां में कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। कवि सम्मेलन में हरियाणा सहित कवियों ने अपनी रचनाओं की प्रभावशाली प्रस्वुतियों दीं। कार्यक्रम में साहित्य एवं समाज के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए शिक्षाविद एवं साहित्यकार डॉ. राजपाल को स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में सक्रिय योगदान के लिए सुरेश भारती नादान का भी सम्मान किया गया। इस अवसर पर डॉ. राजपाल ने कहा कि हिंदी भाषा और साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए ऐसे आयोजन निरंतर होते रहने चाहिए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन नई पीढ़ी को अपनी भाषा, संस्कृति और साहित्य से जोड़ने का प्रभावी माध्यम है।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय साहित्यिक संस्थान के अध्यक्ष रवि प्रताप सिंह, प्रांतीय अध्यक्ष ओम प्रकाश शर्मा निर्मल, प्रांतीय महामंत्री सुरेश कवि कलाकार, बालव्यिुड कलाकर युरेश भंति नगें, डॉ. सीमा विरला, खुशन्वु जैन, डॉ. राजबाल राज आदि मौजूद रहे।

वरिष्ठ कवि राजेश भारती हुए सम्मानित 20वॉ 'हंस कविता पुरस्कार' से सम्मानित

हिसार, संवाददाता । अपरश खोज

हरियाणा के हिसार में राजकीय उदयभानु हंस की जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में गुरु गोरथानाथ जी राजकीय महाविद्यालय, हिसार के सभागार में 20वें हंस कविता पुरस्कार समारोह एवं कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन सम्यम्न हुआ। साहित्य, संस्कृति और हिंदी भाषा के संवर्धन को समर्पित इस आयोजन में हरियाणा सहित विभिंन राज्यों के आयुंवी साहित्यकारों, कवियों, शिक्षाविदों, शोथार्थियों, विद्यार्थियों एवं साहित्य प्रेमियों ने उत्साहपुर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में राजकीय उदयभानु हंस के साहित्यिक अदवान को स्मरण करते हुए हिंदी साहित्य के प्रति नई पीढ़ी में जागरूकता और सम्मान का संदेश दिया।

कार्यक्रम का शुभारंम्थ दीप प्रज्ज्वलन एवं राजकीय उदयभाम्नु हंस के प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। ततश्शन्त महाविद्यालय उपाचार्य राजेन्द्र सेया जी ने मेधावी अतिथिंयों का पुष्पगुच्छ एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर अभिनन्दन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के निदेशक डॉ. धर्मदेव विद्यार्थीं ने की। मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. भुगुनाथ उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथिंयों के रूप में ओमप्रकाश कावांडिया, डॉ. सुधांशु, डॉ. मनोज भारत एवं डॉ. महेंद्र सिंह ने समारोह की शोभा बढ़ाई।

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. हिन्दी व्यंजनों में क वर्ग की सभी ध्वनियाँ हैं? - कण्ठ्य
2. हिन्दी व्यंजनों में उच्चारण स्थान के आधार पर च वर्ग की सभी ध्वनियाँ हैं? -तालव्य
3. उच्चारण स्थान के आधार पर हिन्दी व्यंजनों में ट वर्ग की सभी ध्वनियाँ हैं?- मूर्धन्य
4. उच्चारण स्थान के आधार पर हिन्दी व्यंजनों में त वर्ग की सभी ध्वनियाँ हैं? -दन्त्य (न-वर्त्य है)
5. उच्चारण स्थान के आधार पर हिन्दी व्यंजनों में प वर्ग की सभी ध्वनियाँ हैं? -दव्योष्ठ्य
6. हिन्दी में उत्क्षिप्त ध्वनियाँ हैं? - दो (ड़, ढ़)
7. हिन्दी में द्विगुण व्यंजन हैं? -ड़, ढ़
8. हिन्दी में अनुनासिक वणों की संख्या है? -५ (ङ, ञ, ण, न, म)
9. वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में निःश्वास में कहीं कोई अवरोध नहीं होता, कहलाती हैं? - स्वर
10. हिन्दी में संयुक्त व्यंजन हैं? क्ष, त्र, ज्ञ, श्र
11. हिन्दी में अन्तःस्थ व्यंजन हैं? य, र, ल, व
12. हिन्दी में उष्म व्यंजन हैं? श, ष, स, ह
13. हिन्दी व्यंजनों में अर्द्धस्वर हैं? य, व
14. वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय निःश्वास में कहीं न कहीं अवरोध होता है कहलाती हैं? - व्यंजन
15. हिन्दी वर्णमाला

स्वर-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ औ।

व्यंजन- क, ख, ग, घ, ङ

च, छ, ज, झ, ञ ट, ठ, ड, ढ, ण त, थ, द, ध, न प, फ, ब, भ, म य, र, ल, व श, ष, स, ह

संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

अनुस्वार- (अं), विसर्ग- (अ:)

द्विगुण व्यंजन-ड़, ढ़

16. मूलतः हिन्दी वर्णमाला में कितने वर्ण हैं? -५२
17. 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल'
18. पंक्ति किसकी है? - भारतेन्दु हरिश्चंद्र
19. ध्वनि-गुण हैं? -मात्रा, स्वर (सुर), आघात, वृत्ति, संगम या संधि, द्वित्व।

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
कांता	सुंदर स्त्री
कांतार	जंगल
कथा	कहानी
कंथा	गुदड़ी
क्रोड	गोद
करोड़	सौ लाख
कटिबद्ध	तैयार
कटिबंध	कमर का एक आभूषण
कंज	कमल

विलोम शब्द (Antonyms)

भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक, अन्तर्विरोधात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है। विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही विलोम (उल्टा) शब्दों की जानकारी आवश्यक है। हिंदी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं; जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, छोटा-बड़ा आदि या फिर उपसर्ग लगाकर; जैसे-ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ या उपसर्ग बदलकर; जैसे-सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल बनाए जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्दों की सूची इस प्रकार है-

शब्द	अर्थ
आदृत	निरादृत
आवर्तक	अनावर्तक
आगमन	निर्गमन
आसक्त	अनासक्त
आशीर्वाद	अभिशाप
आशिष्	अभिशाप, शाप
इच्छा	अनिच्छा
इहलोक	परलोक
इति	अथ
इष्ट	अनिष्ट
ईमानदार	बेईमान
ईश्वर	अनीश्वर
उचित	अनुचित
उपचार	अपचार

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Tabulation = सारणी बनाना

Tally = मिलाना

Tariff = दर सूची

Tenure = अवधि/पट्टा

Terminal = आवधिक

Testimonial = प्रशंसा-पत्र

Time barred = कालातीत/कालबाधित

Time limit कालावधि

Time table = समय सारणी

Toll Tax = पथकर

Transaction = संचालन/लेन-देन

Transit = संक्रमण

Tribunal = अधिकरण

Trust = न्यास/विश्वास

Ultravires = शक्ति बाह्य

Unanimity = सर्व सम्मति/मतैक्य

Unavoidable = अपरिहार्य

Under Certificate of Posting = डाक प्रमाणित

Underlying = के नीचे/अन्तर्निहित

Undisbursed = अवितरित

Undue = अनुचित

Unforseen = अदृष्ट

Unilateral = एकपक्षीय

Unstarred = अतारांकित

Unpaid = अदत्त

Upgrading = उन्नयन

Uphold = पुष्ट करना/मर्यादा बनाए रखना कीर

Utilisation certificate = उपयोग प्रमाण-पत्र

Vague = अस्पष्ट/अनिश्चित

Valid = विधिमान्य

Vigilance = सर्तकता

ग़ज़ल

ख़ामोशियाँ फिर से गुनगुनाने लगीं

ख़ामोशियाँ फिर से गुनगुनाने लगीं,
जिन्हें भूलना चाहा, वही याद आने लगीं।

ख़ामोशियाँ फिर से गुनगुनाने लगीं,
ज़ख्म अभी पूरी तरह भरे भी न थे,
उँगलियाँ फिर से उन्हें कुरेदने लगीं।

ख़ामोशियाँ फिर से गुनगुनाने लगीं,
वक़्त की मार से टूटे थे दिल के आईने,
आज फिर उनमें उनकी सूरत नज़र आने लगी।

ख़ामोशियाँ फिर से गुनगुनाने लगीं,
बरसों से टूटी पड़ी थी दिल की हर आस,
उन्हें देखकर फिर उम्मीदें मुस्कुराने लगीं।

ख़ामोशियाँ फिर से गुनगुनाने लगीं,
सीने में दबाए थे राज़-ए-मोहब्बत,
आँखें सभी से अपना राज़ बताने लगीं।

ख़ामोशियाँ फिर से गुनगुनाने लगीं।

डॉ राजेंद्र प्रसाद राज़ (डॉ.आर पी राज़)

पुस्तक समीक्षा

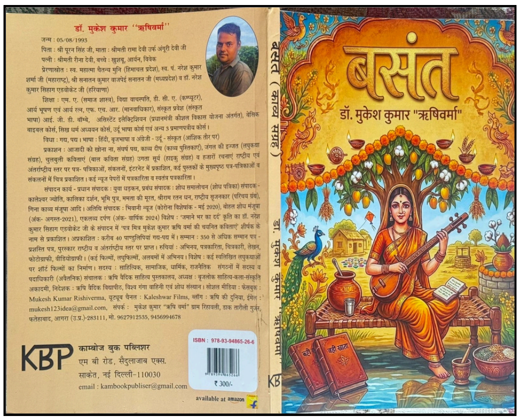

लेखक: डॉ. मुकेश कुमार "ऋषिवर्मा"
पुस्तकः “बसंत"
मूल्य: ₹300.00
पृष्ठ: 111
संस्करण : 2026
काम्बोज बुक पब्लिशर एम बी रोड, सैदुलाजाब एक्स. साकेत, नई दिल्ली-110030

डॉ. मुकेश कुमार “ऋषिवर्मा” का काव्य-संग्रह ‘बसंत’ समकालीन हिन्दी कविता का एक महत्त्वपूर्ण एवं बहुआयामी संग्रह है। इसमें प्रकृति, मानवीय संवेदना, सामाजिक यथार्थ, सांस्कृतिक चेतना तथा आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। यह संग्रह केवल ऋतु-सौंदर्य का चित्रण नहीं करता, बल्कि जीवन के विविध अनुभवों, संघर्षों, संबंधों और मानवीय मूल्यों को भी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करता है। कवि के लिए ‘बसंत’ केवल प्रकृति में होने वाला परिवर्तन नहीं, बल्कि मनुष्य के अंतर्मन में जागने वाली आशा, प्रेम, करुणा, सृजनशीलता और नवचेतना का प्रतीक है।

इस संग्रह की प्रमुख विशेषता इसकी विषय-विविधता और जीवन-सापेक्षता है। कवि ने प्रकृति, राष्ट्रप्रेम, किसान-जीवन, शिक्षा, परिवार, सामाजिक संबंधों, संस्कृति, अध्यात्म और मानवीय मूल्यों जैसे अनेक विषयों को अपनी कविताओं का आधार बनाया है। उनकी कविताएँ जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों के माध्यम से बड़े जीवन-सत्यों को अभिव्यक्त करती हैं। कहीं प्रकृति का मनोहारी सौंदर्य दिखाई देता है, तो कहीं सामाजिक विसंगतियों के प्रति संवेदनशील दृष्टि।

डॉ. ऋषिवर्मा की काव्य-दृष्टि मूलतः मानवीय और आशावादी है। उनकी कविताओं में प्रेम, करुणा, सह-अस्तित्व, नैतिकता और मानवीय गरिमा के प्रति गहरा विश्वास दिखाई देता है। वे उपदेश देने के बजाय सहज अनुभूतियों के माध्यम से पाठक को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करते हैं। संघर्षों के बीच भी वे आशा और सृजन की संभावनाएँ खोजते हैं।

प्रकृति इस संग्रह की आत्मा है। बसंत, सावन, वृक्ष, पुष्प, पवन, नदी और ऋतुओं के माध्यम से कवि ने प्रकृति के विविध रूपों को सजीव बनाया है। साथ ही, प्रकृति और मनुष्य के आत्मीय संबंध तथा पर्यावरणीय चेतना को भी उभारा है।

भाषा और शिल्प की दृष्टि से संग्रह की भाषा सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण और संप्रेषणीय है। बिंब, प्रतीक, मानवीकरण और लयात्मकता का संतुलित प्रयोग कविताओं को प्रभावशाली बनाता है।

समग्रतः ‘बसंत’ प्रकृति-सौंदर्य, मानवीय संवेदना, सामाजिक सरोकार, सांस्कृतिक मूल्यों और सकारात्मक जीवन-दर्शन का सशक्त काव्य-संग्रह है। इसकी विषय-विस्तार, भावों की प्रामाणिकता और भाषा की सहजता इसे विशिष्ट बनाती है। निस्संदेह, यह कृति पाठकों को सौंदर्यबोध के साथ-साथ संवेदनशील, सकारात्मक और मानवीय जीवन-दृष्टि अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

समीक्षक
डॉ राजपाल
हिंदी-विभाग